जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

29 जुलाई, 2021

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया ने 'अफगानिस्तान: एमर्जिंग जियोपोलिटिक्स एंड रीजनल इम्प्लिकेशन' पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया

एमएमएजे अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन अकादमी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) ने 28 जुलाई 2021 को 'अफगानिस्तान: एमर्जिंग जियोपोलिटिक्स एंड रीजनल इम्प्लिकेशन' पर एक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया। डॉ. अविनाश पालीवाल, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के वरिष्ठ व्याख्याता और लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज में दक्षिण एशिया संस्थान के उप निदेशक ने व्याख्यान दिया।

प्रो. अजय दर्शन बेहरा, कार्यवाहक निदेशक, एमएमएजे-अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन अकादमी, ने स्पीकर और प्रतिभागियों का स्वागत किया। अपनी प्रारंभिक टिप्पणियों में उन्होंने व्याख्यान के विषय का परिचय दिया और रेखांकित किया कि तालिबान कैसे समय-समय पर सत्ता से उठे और गिरे हैं। इस क्षेत्र के इस पैटर्न का भू-राजनीतिक प्रभाव भारत को "सभी हितधारकों" के साथ "एकाधिक ट्रैक" से जुड़ने के लिए मजबूर कर रहा है।

डॉ. पालीवाल ने अपने व्याख्यान को चार व्यापक वर्गों में विभाजित किया - इस्लामी गणराज्य बनाम इस्लामी अमीरात, पाकिस्तान और अफगानिस्तान का भविष्य, क्षेत्रीय शक्तियां: चीन, रूस, ईरान और मध्य एशिया तथा भारत के लिए निहितार्थ।

तालिबान के हालिया सैन्य हमले का विश्लेषण करते हुए, डॉ. पालीवाल को संदेह था जाहिर किया कि तालिबान मुख्य शहरों और काबुल पर क्षेत्रीय नियंत्रण करने की स्थिति में है। तालिबान की मुख्य रणनीति सीमा चौकियों पर नियंत्रण करके और संसाधनों की आमद को कम करके अफगान सरकार को कमजोर करने की लगती है। तालिबान का लक्ष्य अफ़ग़ान सरकार के राजनीतिक पतन का है न कि सैन्य अधिग्रहण का- और यह केवल रणनीति ही नहीं बल्कि यह बचे रहने का तंत्र भी है। 31 अगस्त तक अमेरिकी सेना की पूर्ण वापसी के बाद, यह देखना-समझना महत्वपूर्ण होगा कि वास्तविक वार्ता शक्ति किसके पास है - चाहे दोहा में हो या कहीं और।

क्षेत्रीय शक्तियों की भूमिका के संबंध में, उनका मानना था कि ईरान पाकिस्तान से स्वतंत्र तालिबान पर लाभ उठाना पसंद करेगा, जबकि रूस और चीन काबुल में एक समावेशी सरकार की इच्छा कर सकते हैं। चीन केंद्रित उग्रवादी समूहों को समाप्त करने और आर्थिक परियोजनाओं के माध्यम से अपने वित्तीय निवेश की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चीन प्रमुख चिंताओं से प्रेरित होगा। तालिबान में पाकिस्तान के कई प्रतिनिधि बने हुए हैं, लेकिन यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि सत्ता में आने पर उसकी नीति क्या होगी। इसलिए, तालिबान के साथ पाकिस्तान का उत्तोलन अधिक समय तक नहीं रह सकता क्योंकि विद्रोह की प्रकृति खंडित है।

अफगानिस्तान में भारत के विकल्पों का विश्लेषण करते हुए, डॉ. पालीवाल की राय थी कि यदि भारत अफगानिस्तान में चीनी प्रभाव को सीमित करने और काबुल और इस्लामाबाद के बीच संतुलन सुनिश्चित करने के लिए गंभीर है, तो उसके पास तालिबान से जुड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। भारत को अफगानिस्तान में भारतीय उपस्थिति के लिए पाकिस्तान की सीमा का आकलन करने और उसे नया रूप देने के लिए पाकिस्तान के साथ बैकचैनल का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

पाकिस्तान एक प्रतिक्रिया के बारे में चिंतित है और नई दिल्ली के साथ एक स्थिर संबंध के लिए तालिबान की इच्छा को रोकने में सक्षम नहीं हो सकता। यह निकट भविष्य में भारत को अपनी नीति में बदलाव के लिए कुछ अवसर प्रदान करेगा।

व्याख्यान में पूरे भारत के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने कई सवाल किए। प्रो. बेहरा ने व्यावहारिक व्याख्यान के लिए वक्ता और प्रतिभागियों को उनकी उत्साही भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया